S H A N T I K U N J

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

☎ (०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

मनुष्य जीवन का यदि कोई दर्शन न हो, उसके साथ आस्थाएँ, मान्यताएँ और किन्हीं सिद्धान्तों का समावेश न हो, तो वह एक जानवर मात्र रह जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपना मूल्य गिरने न पाये, यह सतर्कता जिसमें जितनी पाई जाती है, वह उतना ही प्रगतिशील है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर विश्वास का अर्थ है-उत्कृष्टता के प्रति असीम श्रद्धा रखने वाला साहस।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संकीर्ण स्वार्थपरता की कीचड़ में सना व्यक्तिवाद ही भव-बंधन है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अंतरात्मा को कुचलना आत्महत्या से भी भयंकर अपराध है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ज्ञान की सार्थकता कर्म में है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शरीर से भी अधिक शक्तिशाली और सामर्थ्यवान् है मनोबल। यह मनोबल दुर्बल से दुर्बल काया को मृत्युञ्जयी बना देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर को प्रसन्न और अप्रसन्न करना सत्कर्मों दुष्कर्मों के आधार पर ही बन पड़ता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हृदयहीन होना मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

निठल्लापन व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए अकल्याणकारी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनोबल ही जीवन शक्ति है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो श्रद्धा अपने विवेक को ताक पर रखने की प्रेरणा दे, वह श्रद्धा नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मानसिक असंतुलन एक प्रकार की विक्षिप्तता ही होती है, जिसमें फँसकर मनुष्य किसी योग्य नहीं रहता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

निठल्ले रहने से शरीर आलसी, व्यसनी और अस्वस्थ बनता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भीरुता एक रंगीन चश्मे की तरह है, जिसे पहन लेने पर डरावना रंग ही चारों ओर छाया हुआ दीखता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

S H A N T I K U N J

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११ ☎ (०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

संकल्प सफलता की जननी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य जीवन का यदि कोई दर्शन न हो, उसके साथ आस्थाएँ, मान्यताएँ और किन्हीं सिद्धान्तों का समावेश न हो, तो वह एक जानवर मात्र रह जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कार्य रूप में परिणत हुए बिना योजनाएँ चाहे कितनी ही अच्छी क्यों न हों, लाभ नहीं दे सकतीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विचारों को विचार से काटने की कला जिसने सीख ली, समझना चाहिए कि उसने मानसिक उलझानों को सुलझाने का रहस्य सीख लिया।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सफलताओं के ताले साहस की चाबी से खुलते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जीवन के बहुमूल्य क्षण इसलिए नहीं है कि दुष्प्रवृत्ति के दुष्परिणामों को अनुभव करने के उपरान्त जानें।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

असंतोष एक घातक दुर्गुण है। यह जिसंको आखेट बना लेता है, उसकी जीवन-वाटिका के सारे फूल जला डालता है, जीवन की ताजगी-हरियाली का अपहरण कर लेता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

उत्तेजना एक भयानक मानसिक रोग है। इससे बचे रहने में ही मनुष्य का हित है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भाग्यवाद हमें नपुंसक और निर्जीव बनाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य की क्षमता का समग्र विकास विषमताओं में ही होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्महीनता अकारण ही मनुष्य को आलसी, असंतुष्ट, चापलूस और क्षुब्ध बना देती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

क्रोध स्वास्थ्य और शान्ति का शत्रु है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दूसरों की हानि में भी अपने लाभ की दृष्टि रखना अनैतिक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परिवार के सदस्यों की सच्ची सेवा उन्हें सद्गुणी और स्वावलम्बी बनाने में है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो कृतज्ञ नहीं, वह मनुष्य नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

अज्ञान उन्नति पथ का अवरोध ही नहीं, पतन की आधारशिला भी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परिस्थितियों की गुलामी चेतना को भी कमजोर बनाती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पुरुषार्थी बढ़ते हैं और सिद्धियाँ पाते हैं। अकर्मण्य पिछड़ते हैं और प्रगति से वंचित रहते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

वे ही आस्था केन्द्र मानवता की वास्तविक सेवा कर सकते हैं, जो मनुष्य में विधेयात्मक श्रद्धा जगायें।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नास्तिकता चित्त की वह स्थिति है, जो दुर्बलता और रुग्णता के कारण कर्कश, दुराग्रहपूर्ण तथा हठवादिता से भरपूर होती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्चा ईश्वर विश्वासी आत्म-बल संपन्न होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

निराशा से घिरा हुआ व्यक्ति संसार में किसी काम का नहीं रहता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिसमें चेतना और क्रियाशीलता है, वही जीवित है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्म-विश्वास असंभव लगने वाले कार्यों को भी संभव बना देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिस घर में कलह, अशान्ति और असंतोष हो वह नरक के समान है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विवाह एक ऐसी मैत्री का पुण्य आरंभ है, जो समस्त कमियों, कमजोरियों और त्रुटियों के बावजूद भी जीवन भर अक्षय बनी रहती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

लक्ष्यविहीन गतिविधियों में घिसट रही जिन्दगी तो लाश ढोने का ही पर्याय है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

उन्नति और प्रगति से रहित जीवन मानव जीवन नहीं है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परिष्कृत अंतःकरण अपने आप में एक परिपूर्ण देवता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अंतःकरण की सुन्दरता की रक्षा और वृद्धि के प्रयासों को ही साधना कहा जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११ ☎ (०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श कर्तृत्व की नीति ही अध्यात्म की सच्ची साधना है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विशृंखल मन और बिखरी शक्ति से संसार में कोई भी बड़ा काम नहीं किया जा सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

केवल ज्ञान ही एक ऐसा अक्षय तत्त्व है, जो कहीं भी, किसी भी अवस्था और किसी भी काल में मनुष्य का साथ नहीं छोड़ता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नीच विचार हमारे सुख में भी हमें डंक मारते हैं और सद्विचार हमें कष्टों में भी सान्त्वना देते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कठिनाइयाँ और संकट ही मनुष्य जीवन को सक्रिय तथा सरस बनाये रखने में सहायक होते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य का एकाग्र मन उन्नति का एकमात्र आधार है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्ची पारिवारिक भावना का विकास तब होता है, जब परिवार का प्रत्येक सदस्य अपना अस्तित्व पूरे परिवार में मिलाकर एकाकार हो जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो सफलता जितना अधिक संघर्ष और संकट सहन करने के बाद मिलती है, उसका आनंद उतना ही अधिक यथार्थ और स्थायी होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जीवन उसी का सफल एवं सार्थक है, जो सदा परोपकार में प्रवृत्त रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर के संकेतों पर चलने वाले में इतनी सामर्थ्य होती है कि ईश्वर को अपने संकेतों पर चला सके।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मन के सुखद भावों को बाहर लाने के लिए हँसी सर्वोत्तम दवा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भूख से अधिक खाना एक ऐसा अपराध है, जिसके बदले में अकाल मृत्यु का दण्ड भुगतना पड़ता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जड़तापूर्वक जीवन जीना मृत्यु से भी बुरा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आस्थाएँ ही चिन्तन और चरित्र की दिशाधारा निर्धारित करती हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रतिभाशाली का पाप समाज का बहुत बड़ा अहित करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

क्रोध को मन में स्थान देना भयंकर जहरीले नाग को घर में बिठाना है, जो एक दिन हमको सर्वथा नष्ट कर डालता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपयश और तिरस्कार का दण्ड जेल और फाँसी से भी मँहगा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिस कल्पना के पीछे योजना न हो, जिस कामना के पीछे पुरुषार्थ न हो, उसकी पूर्ति असंभव ही रहती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पतित विचारों वाला व्यक्ति इतना अशक्त एवं असमर्थ हो जाता है कि अपने फिसलते पैरों को स्थिर रख सकना उसके वश की बात नहीं रहती।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सम्पदा को सब कुछ मान बैठने और चेतना की उत्कृष्टता को उपेक्षित रखने की भूल निश्चित रूप से अदूरर्शिता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परिवार निर्माण का तात्पर्य है, उस छोटी सी संस्था में सद्‌भावनाओं और सत्प्रवृत्तियों का बीजारोपण, परिपोषण और अभिवर्धन।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कोई देश, समाज, वर्ग, समूह और धर्म तब तक समुन्नत नहीं हो सकता, जब तक उसके लोग स्वस्थ न हों।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

असंयम और अनियमितताओं की कुल्हाड़ी चलाकरशरीर रूपी मंदिर तोड़-फोड़ डालने वाला मनुष्य धर्मात्मा नहीं हो सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर उपासना करने वाले व्यक्ति का श्रम और समय कभी व्यर्थ नहीं जा सकता। उसे आशाजनक सत्परिणाम प्राप्त होकर रहते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नेकनाम रहना अच्छी बात है, परन्तु नेकनामी के लिए झूठी बातों में दबना अपनी आत्मा की हत्या करना है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अमर्यादित कल्पनाएँ मनुष्य को निरन्तर तड़पाती रहती हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

वस्तुओं और परिस्थितियों में सुख ढूँढना एक प्रकार की मानसिक मृगतृष्णा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रेम, त्याग और उदारता परिवार के प्राण हैं, जीवन रस हैं, आत्मा हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भौतिक संपन्नता में ईमानदारी बाधक सिद्ध होती है, यह मान्यता उन लोगों की है जो पुरुषार्थ से जी चुराते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विचारों का विकास एवं उनकी निर्विकारिता दो बातों पर निर्भर हैं-सत्संग और स्वाध्याय।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

S H A N T I K U N J

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११
☎ (०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

कर्त्तव्य और उत्कर्ष के सात्विक संकल्प से किया गया विवाह ही संतोष तथा प्रसन्नता दे सकता है और प्रगति की ओर ले जा सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य को सच्ची और चिरस्थायी तृप्ति तभी मिलती है, जबकि उसके अंतःकरण की आनंद पिपासा पूरी हो जाय।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईमानदारी, निष्कपटता, सरलता, सच्चाई ऐसी वृत्तियाँ हैं, जो जीवन को खुले पन्ने की तरह रखती हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सादा जीवन-उच्च विचार, यह आत्मवादी की प्रथम साधना है। इस साधना को अपनाये बिना कोई भी व्यक्ति आत्म कल्याण की ओर अग्रसर नहीं हो सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुर्बलता का छोटा सा छिद्र भी मनुष्य के पतन के लिए काफी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शोक, संताप एवं निराशा की जननी खिन्नता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो अपनी अंतरात्मा की आवाज को अनसुनी करते हैं, वे पापी हैं, क्योंकि वे आत्मा रूपी परमात्मा की अवहेलना करते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

तात्कालिक प्रलोभन के आकर्षण में अंधे होकर घुस पड़ना और भविष्य के दुष्परिणाम को भूल जाना इसी का नाम लोभ है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हर व्यक्ति अपनी कीमत की मुहर स्वयं लगाता है। अपने लिए हमें वही मूल्य संसार से प्राप्त होता है, जिसका हम दृढ़ इच्छा शक्ति से दावा करते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिस समाज के वृद्धजन आलसी, स्वार्थी, मोहग्रसित और संकीर्णतावादी होंगे, उस राष्ट्र या समाज का स्तर कभी भी उज्ज्वल न बन सकेगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो पढ़ते, सुनते, सोचते, समझते तो बहुत हैं, पर उसे करने की हिम्मत नहीं दिखा पाते, उनका नपुंसक ज्ञान एक प्रकार से भार रूप ही कहा जाएगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बड़प्पन बड़े आदमियों के संपर्क से नहीं, अपने गुण, कर्म, स्वभाव की निर्मलता से मिला करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिसे केवल अपने ही लाभ की बात सूझती है, दूसरों के दुःख-दर्द से कोई वास्ता नहीं, वह सबसे बड़ा नास्तिक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कठिनाइयाँ, प्रतिकूलताएँ साधना के व्यायाम हैं। इनका निर्माण इस उद्देश्य से किया गया है कि साधक की आत्म-शक्ति, दृढ़ विश्वास तथा अटल संकल्प की परीक्षा हो सके।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कुबुद्धि ऐसी अग्नि है कि वह जहाँ भी रहती है वहीं की वस्तुओं को जलाने और नष्ट करने का कार्य निरन्तर करती रहती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

S H A N T I K U N J

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११ ☎ (०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

मैत्री भावना एक अमोघ अमृत है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मन के सुखद भावों को बाहर लाने के लिए हँसी सर्वोत्तम दवा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सज्ञनता मनुष्यता का ही दूसरा नाम है। जिसमें सज्ञनता नहीं, उसे नर पशु ही कहना पड़ेगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शुभ, सात्विक और आशापूर्ण विचार एक ऐसा किला है, जिसमें मनुष्य हर प्रकार के आवेगों और आघातों से मुक्त रह सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो लोग सामाजिक जीवन में विषमताएँ पैदा कर रहे हैं, वे दुःखी, पीड़ित और दलित आत्माओं के अभिशाप से बच नहीं सकते।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दैवी उन्नति के पथ पर आरूढ़ व्यक्ति के लिए क्रोध साक्षात् विष तुल्य है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो मनुष्य जितना प्रसन्न रहता है, वह अपना आध्यात्मिक बल उतना ही बढ़ा लेता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

लक्ष्मी केवल पुरुषार्थी का वरण करती है। आलसी का भविष्य तो दुर्भाग्य का रोना रोने के लिए है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जीवन की सार्थकता-उपयोगिता तभी सिद्ध होती है, जब वह किन्हीं आदर्शों के लिए जिया जा रहा हो।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रसन्नता प्रकृति की दी हुई बिना मोल की सबसे महत्त्वपूर्ण पौष्टिक खुराक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सुख और श्रेय मानव जीवन की दो महान् उपलब्धियाँ हैं, इनको पा लेना ही जीवन की सफलता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परिस्थितियाँ नहीं, मनःस्थिति ही हमें नरक में डुबोती है या स्वर्ग के शिखर पर चढ़ाती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अनियंत्रित विचार सदा निम्नगामी होते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्मोन्नति संसार की किसी भी बड़ी से बड़ी उन्नति से उच्च एवं महनीय होती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भाग्यवाद हमें नपुंसक और निर्जीव बनाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

S H A N T I K U N J
शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११ ☎ (०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

बुद्धि दुधारी तलवार है। वह सामने वाले को भी मार सकती है और अपने को काटने के लिए भी प्रयुक्त हो सकती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

किसी आदर्श के लिए, सिद्धान्त की रक्षा के लिए हँसते-हँसते जीवन का उत्सर्ग कर देना सबसे बड़ी बहादुरी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

लाभ-हानि, सुख-दुःख और यश-अपयश के अवसर हर किसी के जीवन में रात और दिन की तरह आते-जाते हैं, न उससे ज्ञानी बचते हैं और न अज्ञानी।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संसार में आरोग्यपूर्ण दीर्घजीवन एक प्रशंसनीय उपलब्धि है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बुरे समय के सच्चे तीन साथी होते हैं-
१- धैर्य,
२-साहस और
३-प्रयत्न

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पशु बलि से देवता अप्रसन्न होते हैं और बदनाम भी।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

स्वास्थ्य संसार में सुख का बहुत बड़ा आधार है। इसके अभाव में सुख-साधनों का कोई मूल्य नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शरीर हृष्ट-पुष्ट हो, हृदय उदार हो, मन प्रसन्न और बुद्धि निर्विकार हो, तभी जीवन का समुचित विकास संभव हो सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य की यह बड़ी भारी कमजोरी है कि वह जिस वस्तु में अपना स्वार्थ जुड़ा देखता है, उसे पाने के लिए कोई भी उचित-अनुचित रीति अपनाने में पाप-पुण्य का ध्यान नहीं करता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अनियंत्रित मन अपना भी बुरा करता है और संसार का भी।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

स्वाध्याय निःसंदेह एक ऐसा अमृत है, जो मानस में प्रवेश कर मनुष्य की पाशविक प्रवृत्तियों को नष्ट कर देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

समय की बर्बादी की तरह ही अनुपयोगी और निरर्थक चिंतन भी हमारी बहुमूल्य शक्ति को नष्ट करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपनी सीमा और शक्ति से परे की आकाँक्षाएँ बना लेना बड़ी भारी भूल है। ऐसे लोगों की आकाँक्षाएँ कभी पूरी नहीं होती।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

असद्‌विचार विष की तरह त्याज्य है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बुद्धिमान् वही है, जो अपने सच्चे मित्र-स्वाध्याय को कभी नहीं छोड़ता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

☎ (०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

मानसिक दक्षता का पूरा-पूरा उपयोग न करने की प्रवृत्ति का नाम है-प्रमाद।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

तुच्छ स्वार्थों की उपेक्षा करने का दुःसाहस जो कर सके, समझना चाहिए कि उसे आत्मबल के भण्डार की चाबी मिल गई।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपना धर्म, अपनी संस्कृति अथवा अपनी सभ्यता छोड़कर दूसरों की नकल करने से कल्याण की संभावनाएँ समाप्त हो जाती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अध्यात्म का अर्थ है-आत्म सुधार, आत्म विकास तथा आत्म निर्माण, जिनके आधार पर शुभ कर्मों और शुभ विचारों की प्रेरणा मिल सके।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आशा का प्रकाश लेकर चलने वालों के मार्ग को अंधकार स्वयं हटकर रास्ता देता चलता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो अपनी आत्मा, अपनी शक्तियों और अपनी क्षमताओं में अविश्वास करता है, उसकी शक्तियाँ भी उसमें अविश्वास करने लगती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बुद्धिमान् व्यक्ति कहने अथवा करने से पहले उसके प्रत्यक्ष-परोक्ष, निकट अथवा दूर पड़ने वाले प्रभाव पर अच्छी तरह विचार कर लेने पर ही कोई काम करते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

केवल मानवाकार में जीवन का प्रवाहित होने रहना मानवता नहीं है। मानवता का लक्षण है-प्रतिदिन उन्नति की ओर बढ़ते जाना।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रगति एवं समृद्धि की प्रशंसा तभी की जा सकती है, जब वह सही साधनों से उपलब्ध हुई हो और उसका उपयोग किन्हीं श्रेष्ठ प्रयोजनों के लिए किया जाता हो।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपव्यय सबसे बड़ी मूर्खता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सब कुछ अपने तथा अपनों के लिए चाहने वाला स्वार्थी व्यक्ति समाज का चोर माना गया है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दृष्टिदोष, संकीर्ण दृष्टिकोण, भाषा दोष और व्यवहार दोष-यह चार दोष ऐसे हैं जो किसी भी व्यक्ति के लिए विरोध की वृद्धि कर देते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बुरी भावनाएँ ही शरीर में बीमारियाँ और रोग पैदा करती हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विचार की पवित्रता से ही जीवन उज्ज्वल एवं उन्नत बनता है। इसके अतिरिक्त जीवन को सफल बनाने वाला कोई उपाय मनुष्य के पास नहीं है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुर्भावनाग्रस्त व्यक्ति किसी का हितैषी अथवा मित्र हो सकता है, यह असंभव है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

S H A N T I K U N J
शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११ ☎ (०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

विद्वता की शोभा अहंकार नहीं, विनम्रता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्म-विश्वास एक बहुत बड़ा बल, सम्बल और साधन है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विचारवान् अपनी असफलताओं के लिए दूसरों को दोषी नहीं ठहराते, वरन् गंभीरतापूर्वक यह खोजते हैं कि किन त्रुटियों के कारण पिछड़ना पड़ा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शालीनता बिना मोल मिलती है, परन्तु उससे सब कुछ खरीदा जा सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कर्त्तव्य मार्ग पर चलने में आने वाले कष्टों को स्वेच्छा और शान्ति से सहन करना ही सच्ची तपस्या है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिन्होंने सुविधाएँ पाने का अधिकार तो जाना, पर कर्त्तव्य पालन की शर्त भूल गये, उनके लिए घर और नरक में कोई अंतर न रहेगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्मदेव की उपासना का अर्थ है-अपने गुण, कर्म और स्वभाव का परिष्कार।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्म निर्माण का ही दूसरा नाम भाग्य निर्माण है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईमानदारी बरतना सरल है, जबकि बेईमानी बरतने में अनेकों प्रपंच रचने और छल-छद्म अपनाने पड़ते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शत्रु भाव एक संक्रामक रोग की तरह है, जो धीरे-धीरे समस्त वातावरण में व्याप्त होकर उसे विषैला बना देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हँसाना एक उत्कृष्ट स्तर का उपकार है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्मा की उत्कृष्टता ही संसार की सबसे बड़ी सिद्धि है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विद्या की प्रशंसा और गरिमा तभी है, जब वह सज्ञनता के साथ शोभायमान हो।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

गुण और सज्ञनता से विमुख हुए व्यक्ति के पास से यश और समृद्धि भाग जाते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अंतःकरण को कुसंस्कारों, कषाय-कल्मषों की भयानक व्याधियों से साधना रुपी औषधि ही मुक्त करती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

हृदय में दया रखना, स्वभाव को नम्र रखना और दान में प्रवृत्ति रखना, इन तीन बातों से मनुष्य सद्‌गति को प्राप्त करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

लोहे की काई लोहे को खा जाती है, उसी प्रकार पाप व वासनाएँ मनुष्य को खा जाती हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपने विश्वास की रक्षा करना प्राण रक्षा से भी अधिक मूल्यवान है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कायर मनुष्य अपनी मृत्यु से पहले अनेकों बार मर चुकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

त्याग में कितना बल तथा सुख है और अनुचित संग्रह से कितनी निर्बलता एवं तकलीफ होती है, इसका ठीक-ठीक अनुभव भुक्तभोगी ही कर सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

उत्थान का आधार है- सही दिशा निर्धारण और सज्ञनता भरा आचरण।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो व्यक्ति सन्ध्या के डूबते हुए सूर्य को देखकर दुःखी होता है और प्रातःकाल के अरुणोदय पर विश्वास नहीं करता, वह नास्तिक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

यदि आप दूसरों को सुधारना चाहते हैं तो पहले स्वयं सुधरने का प्रयत्न कीजिए।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिनमें कुछ कर गुजरने की भावना होती है, मार्ग में हजार बाधाएँ आने पर भी उनके क्रिया कलाप नही रुकते।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्ची उपासना का सच्चा प्रतिफल यही है कि मनुष्य अधिकाधिक आदर्शवादी एवं उत्कृष्ट जीवन जी सके।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

एक दिन का सदाचार युक्त और ज्ञानपूर्वक जीना सौ वर्ष के असंयमित और अज्ञानमय जीवन से कहीं अच्छा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

व्रत का आध्यात्मिक अर्थ उन आचरणों से है जो शुद्ध, सरल और सात्विक हों और उनका पालन विशेष मनोयोगपूर्वक किया गया हो।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सब रोगों की एक दवा है- प्रसन्न रहना और प्रसन्न रहने के लिए आवश्यक है अपना जीवन निष्कलुष, निष्पाप और निर्दोष बनाना।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परमार्थ के कार्यों में न समय बाधक बनता है और न ही साधनों का अभाव; बस कमी होती है तो केवल संकल्पों की।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भौतिकता का परिणाम है- विस्तार और आध्यात्मिकता का प्रतिफल है-उत्कर्ष।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईमानदार, प्रामाणिक और चरित्रनिष्ठ व्यक्तियों से ही देश, जाति और इतिहास धन्य होते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

महानता का मार्ग चुनने वालों के लिए प्रलोभनों, आकर्षणों, दबावों से विचलित हो उठना और सद्धुदेश्यों से पैर पीछे हटा लेना अशोभनीय है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य आत्म दुर्बल तभी तक रहता है, जब तक वह आत्म-विवेचन का सच्चा स्वरूप ग्रहण नहीं करता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पाना या खोना भाग्य के हाथ की बात नहीं है, वह तो मनुष्य के पौरुष-अपौरुष का फल है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जीवन का सच्चा मूल्य कर्त्तव्य पालन है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सहृदयता मनुष्यता का प्रधान लक्षण है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

किसी आदर्श के लिए अथवा सिद्धान्त की रक्षा के लिए हँसते-हँसते जीवन का उत्सर्ग कर देना सबसे बड़ी बहादुरी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आहार-विहार में संयम बरता जा सके और मस्तिष्क को अनावश्यक उत्तेजनाओं से बचाये रखा जा सके तो सुखपूर्वक निरोग जीवन जिया जा सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो जीवन सम्पदा के साथ उत्तेजनात्मक खिलवाड़ करते हैं, वे ही उसे असमय होली की तरह जलाते और समय के पूर्व बेमौत मरते देखे जाते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

क्रोध, ईर्ष्या, चिन्ता, भय और आशंका जैसे मनोविकार धारणकर्त्ता का ही सर्वनाश करते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

यश की अभिलाषा आंतरिक हो और किसी आदर्श पर प्रतिरोपित हो तो ही मनुष्य कठिनाइयों के उच्च शिखर पर चढ़ता चला जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सुख के साधन पाकर उनका भोग अनियंत्रित रूप से करना एक आत्मघाती कदम है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रेम संसार की वह ज्योति है, जिसका प्रकाश पाकर हर व्यक्ति अपने अंतरंग के कषाय-कल्मषों को दूर हृदय को पवित्र और निर्मल बनाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

साधनों की कमी, परिस्थितियों की प्रतिकूलता तथा प्रवीणता की न्यूनता के रहते हुए भी प्रचण्ड संकल्प शक्ति और अदम्य साहसिकता के बल पर मनुष्य बहुत कुछ कर सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कर्त्तव्य बुद्धि के परिष्कार से ही गुणों की पराकाष्ठा तक पहुँच पाना संभव है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

मानसिक दौर्बल्य अथवा मनोहीनता मानव जीवन के लिए भयानक अभिशाप है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कलुषित विचार हमारे सुख में भी हमें डंक मारते हैं और सद्विचार हमें कष्टों में भी सान्त्वना देते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पराधीन व्यक्ति संसार में कभी भी सुख और शान्ति नहीं पा सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सद्गुणों के प्रति निष्ठावान् होने से सर्वोपरि सम्मान मिलता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर की इच्छा के अनुरूप हम अपनी इच्छा को मोड़ लें, यही ईश्वर के प्रति सच्चा समर्पण है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

श्रेष्ठ भावनाओं के सामने विपत्तियाँ देर तक नहीं ठहर सकतीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सर्वोपरिता प्राप्त करने के लिए घोर कष्टों का सामना किये बिना कोई बच नहीं सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

महानता के गुण अंतःकरण में समाविष्ट हो जाने पर सफलताएँ कदम चूमती हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सफलता का द्वार उन लोगों के लिए खुलता है जो आशा, उत्साह और हिम्मत के सहारे द्वार पर बैठी हुई दुर्बलता रुपी सिंहनी को पछाड़ सकते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सौभाग्य ऊपर से नहीं टपकता, वरन् भीतर से उभरता है; जिसे पाने के लिए आत्म निरीक्षण के क्षेत्र में उतरकर अंतःकरण की असीम क्षमताओं को उत्थान के लिए उभारा जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

वही धन फलता-फूलता है जो परिश्रम और ईमानदारी के साथ कमाया जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

श्रेष्ठ आदतों में सर्वप्रमुख है-नियमितता की आदत।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

झगड़ने वाले दुश्मनों से उतना डरने की आवश्यकता नहीं, जितना मित्र बनकर घात करने वालों से।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

देवत्व की रक्षा करने से बढ़कर और कोई धर्म नहीं तथा देवत्व अपनाने से बढ़कर और कोई कर्त्तव्य नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रेम ही एकमात्र ऐसी भाव-संवेदना है जिससे स्वजन-सहचरों से लेकर प्रकृति के जीव-जंतुओं और वनस्पतियों तक को वश में किया जा सकता और सुधारा, सँवारा जा सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शरीर को देखकर मनुष्य होना पहचाना जाता है और भावना देखकर उसका दैत्य या देवता होना।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

स्वर्ग और नरक अपने घर में ही देखा जा सकता है। मुस्कान में स्वर्ग तथा विग्रह के साथ जुड़ा हुआ नरक कभी भी प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

घमण्डी के लिए कोई ईश्वर नहीं। ईर्ष्यालु का कोई पड़ोसी नहीं और क्रोधी का कोई मित्र नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विद्या वह जो नम्रता सिखाए व उचित-अनुचित का विश्लेषण करते हुए नीति मार्ग पर चलने का साहस प्रदान करे।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो विद्या अहंकार, आलस्य और अनीति की ओर धकेले, उसे प्राप्त करने की अपेक्षा अशिक्षित रहना ही अच्छा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिसने शिष्टता और नम्रता नहीं सीखी, उसका बहुत सीखना भी व्यर्थ रहा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जब तक हम ईश्वर की बताई राह पर चलते हैं, वह हमारी सहायता करता है। जब कुमार्ग पर चलते हैं, तो मुसीबतों में फँसाकर झिड़क देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सत्य अकेला नहीं, प्रेम और न्याय को भी साथ लेकर चलता है। इसी प्रकार असत्य के साथ पतन और विग्रह के सहचरों की जोड़ी चलती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अध्यात्म एक नकद धर्म है, जिसे मात्र आत्मशोधन की तपश्चर्या से ही भुनाया जा सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

उपलब्धियाँ इस संसार में भरी पड़ी हैं, पर उन्हें प्राप्त करने के लिए ज्ञान, चरित्र एवं साहस चाहिए।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुनिया की निन्दा-स्तुति की परवाह मत करो। हृदय टटोलो और उसकी आवाज सुनो।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रशंसकों पर ही प्रसन्न न हों, महत्त्व उन्हें भी दें जो सही आलोचना कर सकते है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य जीवन का सौभाग्य और आनंद सज्जनता और सहृदयता के सहारे ही उपलब्ध होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रेम में मनुष्य सब कुछ दे कर भी यही सोचता है कि अभी कम दिया।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अनीति सहन करते रहने की अपेक्षा उससे लड़ते हुए मर जाना अच्छा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

S H A N T I K U N J

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

☎ (०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

मन का संकल्प और शरीर का पराक्रम यदि किसी काम में पूरी तरह लगा दिया जाय तो सफलता मिलकर रहेगी।

- *पं० श्रीराम शर्मा आचार्य*

अमृत वचन

सत्य में हजार हाथियों के समान बल होता है; इसलिए अंतिम विजय उसी की होती है।

- *पं० श्रीराम शर्मा आचार्य*

अमृत वचन

वही जीवित है, जिसका मस्तिष्क ठंडा, रक्त गरम, हृदय कोमल और पुरुषार्थ प्रखर है।

- *पं० श्रीराम शर्मा आचार्य*

अमृत वचन

महान् कार्य शक्ति के सहारे नहीं, दूरदर्शिता के बल पर संपन्न होते हैं।

- *पं० श्रीराम शर्मा आचार्य*

अमृत वचन

ईमानदार होने का अर्थ है-हजार मनकों में अलग चमकने वाला हीरा।

- *पं० श्रीराम शर्मा आचार्य*

अमृत वचन

सार्थक और प्रभावी उपदेश वह है, जो वाणी से नहीं आचरण से दिया जाता है।

- *पं० श्रीराम शर्मा आचार्य*

अमृत वचन

शारीरिक गुलामी से बौद्धिक गुलामी भयंकर है।

- *पं० श्रीराम शर्मा आचार्य*

अमृत वचन

श्रेष्ठता प्राप्त करने का अभ्यास आवेश या अंधानुकरण पर आधारित न हो, अन्यथा अधिक देर तक उस सत्कर्म में टिके रहना संभव न होगा।

- *पं० श्रीराम शर्मा आचार्य*

अमृत वचन

मनुष्य का जन्म तो सहज होता है, पर मनुष्यता उसे कठिन प्रयत्न से प्राप्त करनी पड़ती है।

- *पं० श्रीराम शर्मा आचार्य*

अमृत वचन

धन या पद पाने की अपेक्षा लोक श्रद्धा प्राप्त करना अधिक मूल्यवान है।

- *पं० श्रीराम शर्मा आचार्य*

अमृत वचन

दुष्ट चिन्तन आग में खेलने की तरह है।

- *पं० श्रीराम शर्मा आचार्य*

अमृत वचन

गृहस्थ एक तपोवन है, जिसमें संयम, सेवा और सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है।

- *पं० श्रीराम शर्मा आचार्य*

अमृत वचन

विपरीत परिस्थितियों में भी जो ईमान, साहस और धैर्य को कायम रख सके, वस्तुतः वही सच्चा शूरवीर है।

- *पं० श्रीराम शर्मा आचार्य*

अमृत वचन

कोई देश केवल गुणवान् नागरिक से ही समुन्नत हो सकता है।

- *पं० श्रीराम शर्मा आचार्य*

अमृत वचन

भाग्य एवं ईश्वर का वरदान एवं अभिशाप भी मनुष्य के अपने विचारों एवं कार्यों के आधार पर ही प्राप्त होता है।

- *पं० श्रीराम शर्मा आचार्य*

S H A N T I K U N J
शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११ ☎ (०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

परोपकार मनुष्य का आध्यात्मिक सद्‌गुण है। इसी भावना पर संसार का सृजन उसकी व्यवस्था और उत्थान सन्निहित है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जीवन की सार्थकता अपने अस्तित्व को मिटाकर परहित के लिए आत्म-बलिदान की भावना में है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

स्वार्थ की भावना और भविष्य के लिए अनुकूल साधन प्राप्त होने की दृष्टि से जो सेवा की जाती है, वह परोपकार नहीं प्रवंचना है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संतोष एक महान् आध्यात्मिक भाव है, जो मनुष्य के हृदय की विशालता को व्यक्त करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संसार के किसी भी बाह्य पदार्थ को अपने सुख का कारण न मानना मनुष्य के सर्वोत्कृष्ट ज्ञान का परिचायक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परोपकार वह है, जो निःस्वार्थ भाव से किया जाय।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर निष्ठा का प्रवेश द्वार संतोष है, इसी में मनुष्य के सारे सुख समाये हुए हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य को सबसे अधिक दुःखी बनाती है-तृष्णा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बिना हाथ-पैर डुलाये किसी के भाग्य देवता ने साथ नहीं दिया। चुपचाप बैठे रहने वाले के पास से तो उन्नति का अवसर पास से गुजरकर चला जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पूर्णतया अनियंत्रित कामनाओं का नाम ही तृष्णा है। इसी से मनुष्य जीवन में तरह-तरह की जटिलताएँ, दुःख और परेशानियाँ आती हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

लघुता को विशालता में व तुच्छता को महानता में समर्पित कर देने की उत्कण्ठा का नाम प्रार्थना है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नर को नारायण, पुरुष को पुरुषोत्तम बनाने का संकल्प प्रार्थना कहलाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रेम हृदय की विशालता का लक्षण है। उसमें स्वार्थ और संकीर्णता का जरा भी स्थान नहीं होता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सौ मूर्खों की प्रशंसा की अपेक्षा समझदार की निन्दा अच्छी।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रेम वशीकरण मंत्र है, जो शत्रु को भी मित्र बनाने की क्षमता रखता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

☎ (०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

जिसके मन, हृदय और आत्मा में प्रेम का प्रकाश उदय हो गया है, वह दूसरों में दोष-दुर्गुण नहीं, सच्चे सौन्दर्य का दर्शन करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रेम में मृत्यु की सी यंत्रणा है, पर उसमें स्वर्गीय आनन्द है। जो प्रेम करता है वही सच्चा सुखी और भाग्यवान् है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रेम मनुष्य की निर्बलता, दरिद्रता और दुःख को शक्तिमत्ता, सम्पन्नता और सुख में परिवर्तित कर देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संकल्प में सूर्य रश्मियों का तेज है, वह जाग्रत् चेतना का शृंगार है, विजय का हेतु और सफलता का जनक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर दर्शन की आकाँक्षा मनुष्य की संपूर्ण कामनाओं की साधक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुःख एवं कातरता की औषधि है-प्रेम। वह हृदय में संचरित होता है और सारे शरीर को स्वस्थ तथा सजीव कर देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संकल्प से प्राप्त मन के बल द्वारा स्वल्प साधनों में भी मनुष्य अधिकतम विकास कर सकता है और मस्ती का जीवन बिता सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संकल्प का सम्बन्ध सत्य और धर्म से होता है। उसका प्रयोग अधर्म और अत्याचार के लिए नहीं हो सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अधर्म से धर्म की ओर, अन्याय से न्याय की ओर, कायरता से साहस की ओर, कामुकता से संयम की ओर अग्रसर होने में ही संकल्प की सार्थकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सद्गुण जिसकी संपत्ति है, वह कहीं भी, किसी भी स्थान में बाधित नहीं हो सकता। गुण ही उसकी सेवा के लिए सदैव तैयार रहेंगे।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिनके संस्कारों में दृढ़ता, तीव्र मनोबल और सुदृढ़ संकल्प शक्ति विद्यमान है, सफलता सदैव उनकी दासी बनकर काम करती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सुख का आधार धर्म और सदाचार है। इसके बिना मनुष्य वास्तविक सुख प्राप्त नहीं कर सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

निष्ठा के साथ अपने कर्त्तव्य का पालन करने वाला और संकट के क्षणों में कर्त्तव्य के प्रति ईमानदार रहने वाला ही सच्चा देशभक्त है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य के सारे मोक्ष प्राप्ति के साधन बेकार ही सिद्ध होंगे, यदि उसने सद्गुणों का अपने जीवन में विकास नहीं किया।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संकल्प तप और क्रिया शक्ति का विधायक है। इसी से उसमें अनेकों सिद्धियाँ और वरदान समाहित हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपने हित और स्वार्थ के लिए झगड़ते रहने की अपेक्षा अपने हितों को निरहंकारिता पूर्वक त्याग देना ही बड़प्पन की कसौटी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

महानता प्राप्त करने के लिए द्वेष तथा दुर्भावना का परित्याग सर्वप्रथम करना पड़ता है। इसके बिना अंतःकरण प्रकाशित नहीं हो पाता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रेम निर्मल और निर्लोभ होना चाहिए, तभी उसका समुचित आनंद मिल सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रतिशोध की भावना अपने आपको ही मलिन, दुष्ट और दुराचारी बना देती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नेकी की राह एक ऐसा राजमार्ग है, जिस पर चलकर मनुष्य हँसते-खेलते मौज लेते हुए जिन्दगी का रास्ता तय कर लेता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रेम का अर्थ अवांछनीयता के आगे सिर झुका देना नहीं, वरन् यह है कि प्रिय पात्र की अनुपयुक्त गतिविधियों को सुधारा जाय।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

धर्म वह है, जो मनुष्य को क्षुद्र जीवन से उठाकर महान् और आत्मदर्शी बनाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

धर्म की जानकारी उपयोगी हो सकती है, पर उसका वास्तविक लाभ तभी है, जब उसे आचरण में उतारने की प्रेरणा मिले।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो लोग अन्याय और अत्याचार से लड़ने से डरते नहीं, वही उनका अंत करने का श्रेय व सम्मान प्राप्त करते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

केवल साधनों की तृष्णा बढ़ती रहे और गुण विकास न हो तो उन्नति का मूल उद्देश्य नष्ट होकर दुर्भावनाओं का विकास होने लगेगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनोविकार एक प्रकार की आग भीतर ही भीतर जलाये रखते हैं, जिससे स्वास्थ्य के लिए उत्तरदायी तत्त्व स्वतः ही नष्ट होते चले जाते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईर्ष्या, द्वेष, प्रतिशोध, कपट और मत्सर की दुष्प्रवृत्तियाँ जिन पर सवार रहती हैं, उनका अंतःकरण निरन्तर उद्विग्न रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

राष्ट्र को धन-दौलत ऊँचा नहीं उठाते, वरन् वहाँ के नागरिकों की चरित्र निष्ठा में वह शक्ति होती है जो उसके गौरव को ऊँचा उठाती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शुद्ध व्यवहार और सदाचार समाज की सुदृढ़ स्थिति के दो आधार स्तम्भ हैं। इनसे व्यक्ति का भाग्य और समाज का भविष्य विकसित होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कष्ट को उपेक्षित करके भी जो कर्त्तव्य पालन कर सकता हो, सच्ची सेवा का पुण्य फल उसे ही प्राप्त होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

40

अमृत वचन

सच्ची जिज्ञासा से ही भगवान् मिलते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संकल्प उस दुर्ग के समान है, जो भयंकर प्रलोभन, दुर्बल एवं डाँवाडोल परिस्थितियों से भी रक्षा करता है और सफलता के द्वार तक पहुँचाने में मदद करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

साहस और निश्चयात्मक विश्वास, संकल्प के दो पहलू हैं इन्हीं से मनुष्य की जीत होती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ऋणी होकर मनुष्य कभी सुखी नहीं रह सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रेम इस धरती का अमृत है और मनुष्य का प्राण। यह जितना ही विकसित होगा, उतनी ही सुख-शान्ति की संभावना साकार होगी।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर की दृष्टि से कोई भी छुपकर पाप और अत्याचार नहीं कर सकता। वह बड़ा कठोर है। दुष्ट को कभी क्षमा नहीं करता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भूतकालीन मान्यताओं को ही पूर्ण सत्य मान बैठना दुराग्रह है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मान्यताएँ पत्थर की लकीर नहीं हैं। आज जिस आधार पर हम एक बात को सत्य मानते हैं, कल आधार बदल जाने पर परिभाषा बदल सकती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य वह है, जो कठिनाइयों को हँस-हँस कर गले लगाता है और परेशानियों के तूफान को उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक मानकर उनसे जूझ पड़ता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कर्म का सुख वस्तुतः उसकी लगन, भावना और निष्ठा में ही है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य का पहला पुरुषार्थ है-जीवन लक्ष्य में प्रमाद न होने देना।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो शक्ति परिस्थितियों को अनुकूल बनाती है, वह है कार्य करने की भावना और लगन।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य का जीवन एक आदर्श कर्म विद्यालय है। इसमें नैष्ठिक स्नातक वे समझे जाते हैं, जो कर्म को जीवन ध्येय मानकर उसे कुशलतापूर्वक निभाते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपनी आकाँक्षाओं की पूर्ति के लिए संघर्ष द्वारा अपनी शक्तियों को व्यक्त करना ही मनुष्य का सच्चा पुरुषार्थ है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिसने जीवन में कोई संघर्ष न किया, परिस्थितियों से टकराकर मानव जीवन की दिव्यता न हासिल की, भला वह भी कोई जीवन है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

S H A N T I K U N J

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११ ☎ (०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

सबसे बड़ी हिम्मत का काम है, अपनी वास्तविकता समझना और अपने दोषों तथा दुर्बलताओं को स्पष्ट रूप से स्वीकार कर लेना।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

छोटी-छोटी बातों पर भाग्य की दुहाई देना कायरों को ही अच्छा लगता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो अभय है वही सच्चा सुखी है। भय में डूबा रहने वाला तो दुःख ही पाता रहेगा, दुःखी ही कहा जाएगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्मा का स्वभाव है प्रेम और प्रेम की परिणति है- सेवा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपना धर्म ठुकराकर गृहस्थ से भागना या घर छोड़कर केवल अपने सुख के लिए इधर-उधर मारे-मारे घूमना पाप है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

एक व्यक्ति की सुविधा के लिए अनेकों को दुःखी एवं कष्टमय जीवन बिताने के लिए विवश करना ईश्वर का विधान कभी नहीं हो सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सुख-शान्ति का निवास पैसे में नहीं, मनुष्य की अंतरात्मा में है, उसके नेक कामों और कोशिशों में है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जमाना किसी को बुरा नहीं बनाता, बल्कि मनुष्य ही जमाने को बुरा बनाते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

क्रोध अंधा होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

क्रोध का आवेग आने पर मनुष्य की सोचने-विचारने की शक्ति क्षीण हो जाती है और वह आवेग में कुछ भी कर सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

क्रोध से मनुष्य के पुण्य कार्य, सद्‌भावनाएँ, सद्‌गुण उसी तरह नष्ट हो जाते हैं, जैसे बाढ़ आने पर कोई उद्यान नष्ट हो जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

क्रोध इतना फुर्तीला मनोविकार है कि इसमें सोचने, विचारने, समझाने-बुझाने का अवसर नहीं रहता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जब क्रोध का आवेग आता है, तो उसका एक ही लक्ष्य होता है- जो अपनी कामनाओं में बाधक बना है, उसे नुकसान पहुँचाना।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

क्रोधी व्यक्ति कभी अपने बारे में नहीं सोचता। इस कारण बड़े-बड़े अनर्थ हो जाते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शरीर और आत्मा दोनों से देवत्व की आभा प्रस्फुटित हो इसके लिए आंतरिक सौन्दर्य उतना ही आवश्यक है जितना बाह्य।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

S H A N T I K U N J

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११
☎ (०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

जो भीतर से स्वच्छ होते हैं, उन्हीं का बाह्य प्रकाश भीतर के प्रकाश से चमककर लोगों के नेत्र और हृदय दोनों को प्रकाशित कर देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नेत्रों से फूटने वाली धूर्तता, कामुकता, अपवित्रता के रहते हुए सारी बाह्य सफाई धोखा मात्र ही है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शृंगार लौकिक कामनाओं का पूरक नहीं, आत्मिक सद्गुणों का परिष्कार है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

श्रद्धा क्षणिक भावुकता आ आवेश का नाम नहीं है, वरन् यह साधना की कठिनाइयों को झेलने की कसौटी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिस तरह दुःख ही दुःख हमें प्रिय नहीं है। उसी तरह सदैव सुख की भी कल्पना नहीं की जा सकती।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्मा के शृंगार में सचमुच एक ऐसा अमृत निर्झर टपकताहै, जिसका मधुपान कर मनुष्य का जीवन आनंद-विभोर हो जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हृदय में श्रद्धा और मन में विश्वास हो तो अनेक कठिनाइयों के होते हुए भी मनुष्य अपने जीवन लक्ष्य की बढ़ता आगे निकल सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

श्रद्धा मनुष्य में दृढ़ निश्चय शक्ति पैदा करती है, जिससे वह उस कंटकाकीर्ण पथ को प्रसन्नतापूर्वक प्राप्त कर लेता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढाल लेने का जीवन-विज्ञान जिनने सीख लिया उनके लिए गरीबी में भी हँसने और प्रसन्न रहने का कारण मौजूद है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रार्थना एक विज्ञान है, जिसमेंस मनुष्य को बदल देने की शक्ति होती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्मा कभी निकृष्ट होना नहीं चाहती, क्यों उत्कृष्टता उसका सहज स्वभाव है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कुएँ की प्रतिध्वनि की तरह हमें अपनी भावनाओं के अनुरूप ही दूसरों का प्रत्युत्तर मिलता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विपत्तियाँ केवल कमजोर, कायर, डरपोक और निठल्ले व्यक्तियों को ही डराती, धमकाती और पराजित करती हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नैतिक आदर्शों का पालन शरीर के प्रतिबन्धों पर नहीं, मन की उच्च स्थिति पर निर्भर है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आर्थिक अपव्ययिता ऐसा व्यसन है जो बचपन से लत लग जाने पर आजीवन पीछा नहीं छोड़ता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आलसी और व्यवस्थित , छिद्रान्वेषी और उद्विग्न मनुष्य के लिए संसार नरक के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मन की मलीनता से बढ़कर इस संसार में मनुष्य का और कोई शत्रु नहीं है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बिना संकटों के मनुष्य का जीवन निखर नहीं सकता और न उसमें त्याग, तितीक्षा एवं सहिष्णुता का ही विकास हो पाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विपत्तियाँ साहस के साथ कर्मक्षेत्र में बढ़ने के लिए चुनौती है। मनुष्य उनसे घबराये नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हम जिन वस्तुओं की जिन परिस्थितियों की इच्छा करते हैं, उनका प्राप्त न होना ही विपत्तियाँ कहलाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संसार में ऐसा कोई मनुष्य नहीं, जिसे जीवन में कभी विपत्तियों का सामना न करना पड़ा हो।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्ची सभ्यता मानवीय गुणों के सामूहिक विस्तार पर ही निर्भर रहती है और उसी के आधार पर कोई समाज या राष्ट्र फलता-फूलता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनोविनोद कर्म मार्ग का एक अद्‍भुत संबल है, इससे थकावट दूर भाग जाती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्म-हत्यारे अनेक प्रकार के होते हैं, पर सबसे बुरे वे हैं जो आत्मा की भूख और प्यास से तरसा-तरसा कर मारते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रेम आत्मा से करते हैं, शरीर से नहीं। कर्त्तव्य से करते हैं, कामुकता से नहीं। प्रेम में किसी तरह का विकार नहीं होना चाहिए।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिसका जीवन खाने-पीने में बीता वस्तुतः वह मर गया। जिसने परमार्थ कमाया उसे ही जीवित एवं अमर कहा जा सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दान के नाम पर हम ठगाते तो बहुत हैं, पर सत्परिणाम की कसौटी पर कसकर खर्च करने वाले कोई बिरले ही होते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शुद्ध, निर्मल और निश्छल प्रेम ही सुखी दाम्पत्य जीवन का प्रमुख आधार है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सेवा मनुष्य का सबसे बड़ा कर्त्तव्य है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

युग का अवसान सद्‍विचारों और सत्प्रवृत्तियों के घट जाने से होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११
(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

सुखी दाम्पत्य का आधार है-पति पत्नी का शुद्ध सात्विक प्रेम।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सौन्दर्य और वासना का प्रे म, प्रेम नहीं कहलाता। वह एक तरह का धोखा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सुदृढ़ भावनाएँ वाले व्यक्ति ही आत्मजयी होते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आस्तिकता मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाये रखने के लिए एक सुदृढ़ अवलम्बन है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भारतीय धर्म की सबसे प्राचीन, सबसे श्रेष्ठ, सबसे वैज्ञानिक और सबसे महत्त्वपूर्ण उपासना गायत्री की ही है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्मा की एकमात्र प्यास परमात्मा बनने की है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हमारा भविष्य आस्तिकता एवं उपासना का आश्रय लिए बिना उज्ज्वल नहीं हो सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जीवन में किसी सद्उद्देश्य की सफलता के लिए दृढ़ निश्चय होना परमावश्यक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

इस संसार में बुरा कोई मनुष्य नहीं, केवल परिस्थितियाँ और भावनाएँ ही बुरी हैं,जिन्हें बदला जा सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ज्ञान की आराधना से ही मनुष्य तुच्छ से महान् बनता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य जैसा सोचता, समझता और विचार करता है, प्रायः वैसा ही बन जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अध्यात्म का उद्देश्य मनुष्य को पाप और कुविचारों की असुरता से छुड़ाकर सत्य और धर्म की सुख-शान्तिमयी गोदी में पहुँचा देने का है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अज्ञान में डूबे रहने से ही मनुष्य पतन, पाप और अंधकार के गर्त में डूबकर दुर्गति को प्राप्त होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिसकी ज्ञान में दिलचस्पी नहीं, वह एक प्रकार से पशु ही कहा जा सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रकृति का अखण्ड नियम है कि वह असंयम बरतने वाले को तत्काल दण्ड न देकर सुधरने का अवसर तो देती है, किन्तु क्षमा कभी नहीं करती।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए पूजा-उपासना जितनी आवश्यक है उतनी यह भी है कि अपने सद्विचारों और सत्कर्मों से उस अंतर्यामी को संतुष्ट किया जाय।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर के किसी भी रूप का साक्षात्कार करने के लिए केवल एक ही नैसर्गिक विधान है-आत्म संयम।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

स्वाध्याय एवं सत्संग अध्यात्म का प्रवेश द्वार है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

धन्य है वे लोग जो दुःख को परमात्मा का प्रसाद समझकर उसे अपने शीश पर धारण कर लेते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपने दोष स्वीकार कर लेने का अर्थ है-सच्चाई के प्रति प्रेम।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्चे आदमी सदैव साहसी होते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपने आंतरिक उद्गारों को सतत प्रार्थनाशील रखने के लिए दुःख चाहिए, कष्ट चाहिए, निरन्तर हृदय में उमड़ने वाली वेदना चाहिए।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुःख हमारे पुरुषार्थ को जगाने आता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुःख से हानि तभी है, जब मनुष्य उनका अभ्यस्त बनकर दीन-हीन बन जाय और अकर्मण्य बनकर उनसे छुटकारा पाने का प्रयास ही छोड़ बैठे।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सुख और दुःख दोनों समान रूप से इसीलिए परमात्मा की ओर से मिले हैं कि इससे मनुष्य का जीवन एकांगी न हो।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुःख निवृत्ति, चिर विश्राम, पूर्ण स्वाधीनता और प्रेम स्वरूप की प्राप्ति-ये चार वस्तुएँ जीवन की चतुर्मुखी आवश्यकताएँ हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परमार्थ के लिए किए गये तप-त्याग में जो दुःख स्वेच्छा से वरण किया जाता है, वह आत्मा के लिए अमृत की तरह मंगलमय सिद्ध होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने आती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुःख के बिना इस मनुष्य जीवन का महत्त्व कुछ भी नहीं रह जाता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुःख जीवन निर्माण का संदेशवाहक है, उसका सत्कार होना ही चाहिए।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

S H A N T I K U N J

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

☎ (०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१, ४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

अपने स्वार्थ, अपनी तृष्णा की पूर्ति के लिए कोई भी अनुचित कार्य परमात्मा को प्रिय नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पापों का नाश किए बिना, इंद्रियों का दमन किये बिना अंतःकरण की शुद्धि नहीं होती।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

निष्काम कर्मयोग परमात्मा की प्राप्ति और सांसारिक सुखोपभोग का सबसे सुंदर और समन्वय-युक्त धर्म है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिनकी कोई संतान नहीं है उन्हें समझना चाहिए कि ईश्वर ने उनके लिए धर्म, कर्म और जीवन लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अधिक सुअवसर प्रदान किया है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्चा सौन्दर्य मनुष्य के सद्गुणों में है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सुन्दरता आपकी प्रसन्नता, मुस्कुराहट, उत्तम स्वास्थ्य, आशायुक्त निश्चिन्त जीवन, हर्ष और उल्लास में छिपी हुइ है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर के किसी भी रूप का साक्षात्कार करने के लिए केवल एक ही नैसर्गिक विधान है-आत्म संयम।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सद्गुणी मनुष्य के लिए इस संसार में कुछ भी अभाव नहीं। उसे आंतरिक शान्ति होती है, संतोष मिलता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पाप और दोष-दुष्कर्म से प्रत्यक्ष में उतना विषैला वातावरण नहीं बनता जितना उसे छिपाने से होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दीन-हीन की तरह दुःखको केवल भोगते रहना अभिशाप है, किन्तु उसके प्रभाव से प्रभावित होकर सचेत होना निश्चय ही जीवन का वरदान है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुःख के बिना इस मनुष्य जीवन का महत्त्व भी कुछ नहीं रह जाता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विपत्तियों की तुला पर जो अपनी सहनशक्तियों सको तौलते रहते हैं, वही अंत में विजयी होते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुःख जीवन निर्माण का संदेशवाहक है। उसका सत्कार होना ही चाहिए।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

यदि विपदाएँ मनुष्य के जीवन में न आएँ तो उसकी अंतर्मुखी चेष्टाएँ कभी भी जाग्रत् न हों।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य का जीवन पाकर भी आत्म ज्ञान से विमुख होना मनुष्य का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य